श्री गजलक्ष्मी कवच

श्री गणेशाय नमः

श्री स्वामी समर्थाय नमः

जय जय जय गणपति गणराजू।
मंगल भरण करण शुभ काजू।।१।।
जै गजबदन सदन सुखदाता।
विश्व विनायक बुध्दि विधाता।।२।।
जय जय जगत जननि जगदम्बा।
सबकी तुम ही हो अवलम्बा।।३।।
तुम ही हो सब घट घट वासी।
विनती यही हमारी खासी।।४।।
वक्र तुण्ड शुचि शुण्ड सुहावन।
तिलक त्रिपुण्ड भाल मन भावन।।५।।
राजत मणि मुक्तन उर माला।
स्वर्ण मुकुट शिर नयन विशाला।।६।।
जगजननी जय सिन्धु कुमारी।
दीनन की तुम हो हितकारी।।७।।
विनवौं नित्य तुमहिं महारानी।
कृपा करौ जग जननि भवानी।।८।।
पुस्तक पाणि कुठार त्रिशूलं।
मोदक भोग सुगन्धित फूलं।।९।।
सुन्दर पीताम्बर तन साजित।
चरण पादुका मुनि मन राजित।।१०।।
धनि शिवसुवन षडानन भ्राता।
गौरी ललन विश्वविख्याता।।११।।
ऋध्दिसिध्दि तव चंवर सुधारे।
मूषक वाहन सोहत द्वारे।।१२।।

हे गजलक्ष्मी तुम सुख के साथी।
दीन दुखारु तुम्हरे चरण लागी।।१३।।
केहि विधि स्तुति करौं तुम्हारी।
सुधि लीजै अपराध बिसारी।।१४।।
कृपा दृष्टि चितवो मम ओरी।
जग पालक विनती सुन मोरी।।१५।।
सुन लीजौ प्रेम अरज हमारी।
अति शुचि पावन मंगलकारी।।१६।।
ज्ञान बुध्दि जय सुख की दाता।
संकट हरो हमरी बनके माता।।१७।।
हे गज वदना तुमही विनायक।
सारे जगत के तुमहि पालक।।१८।।
एक समय गिरीराज कुमारी।
पुत्र हेतु तप कीन्हा भारी।।१९।।
भयो यज्ञ जब पूर्ण अनूपा।
तब पहुंच्यो तुम धरि द्विज रुपा।।२०।।
अतिथि जानि कै गौरि सुखारी।
बहुविधि सेवा करी तुम्हारी।।२१।।
अति प्रसन्न हवै तुम वर दीन्हा।
मातु पुत्र हित जो तप कीन्हा।।२२।।
मिलहि पुत्र तुहि, बुध्दि विशाला।
बिना गर्भ धारण यहि काला।।२३।।
गणनायक गुण ज्ञान निधाना।
पूजित प्रथम रुप भगवाना।।२४।।
लक्ष्मी माता शक्ति से भर लीन्हा।
सारे जगत को सुख ही सुख दीन्हा।।२५।।
चौदाह रत्न में तुम सुखरासी।
सेवा कियो प्रभु बनि दासी।।२७।।

जब जब जन्मं जहा प्रभु लीन्हा।
रुप बदल तहं सेवा कीन्हा।।२८।।
गज लक्ष्मी सम शक्ती नहीं आनी।
कहं लौ महिमा कहौं बखानी।।२९।।
मन क्रम वचन करै सेवकाई।
मन इच्छित वांछित फल पाई।।३०।।
तजि छल कपट और चतुराई।
पूजहिं विविध भांति मनलाई।।३१।।
और हाल मैं कहौं बुझाईं।
जो यह पाठ करै मन लाई।।३२।।
ताको कोई कष्ट न होई।
मन इच्छित पावै फल सोई।।३३।।
त्राहि त्राहि जय दुःख निवारी।
त्रिविध ताप भव बंधन हारी।।३४।।
सकल मगन, सुखमंगल गावहिं।
नभ ते सुरन, सुमन वर्षावहिं।।३५।।
शम्भु,उमा,बहु दान लुटावहिं।
सुर मुनिजन गज लक्ष्मी देखन आवहिं।।३६।।
लखि अति आनन्द मंगल साजा।
देखन भी आये सूरज राजा।।३७।।
सोम भौम बुध गुरु आवैं।
शुक्र शनि राहु केतु तुम्हारे गुण गावैं।।३८।।
तुम्हरी महिमा बुध्दि बडाई।
शेष सहसमुख सके न गाई।।३९।।
मैं मतिहीन मलीन दुखारी।
करहुं कौन विधि विनय तुम्हारी।।४०।।
भजत रामसुन्दर प्रभुदासा।
जग प्रयाग,ककरा,दुर्वासा।।४१।।

अब प्रभु दया दीन पर कीजै।
अपनी भक्ति शक्ति कछु दीजै।।४२।।
गज लक्ष्मी की महिमा जों कोई पढै पढ़ावै।
ध्यान लगाकर सुनै सुनावै।।४३।।
ताकौ कोई न रोग सतावै।
पुत्र आदि धन सम्पत्ति पावै।।४४।।
पुत्रहीन अरु संपति हीना।
अन्ध बधिर कोढ़ी अति दीना।।४५।।
गज लक्ष्मी की कृपा दृष्टी सब लिन्हा।
पावै सुख समरुध्दी जगत में माना।।४६।।
सुख सम्पत्ति बहुत सी पावै।
कमी नहीं काहू की आवै।।४७।।
मोहि अनाथ की सुधि अब लीजै।
संकट काटि भक्ति मोहि दीजै।।४८।।
भूलचूक करि क्षमा हमारी।
दर्शन दीजे दशा निहारी।।४९।।
बिन दर्शन व्याकुलअधिकारी।
तुमहि अछत दुःख सहते भारी।।५०।।
नहिं मोहि ज्ञान बुध्दि है तन में।
सब जानत हो अपने मन में।।५१।।
सुन्दर रुप करके धारण।
कष्ट मोर अब करहु निवारण।।५२।।
गजलक्ष्मी का नाम लेत जों कोई।
जग कहं सकल काज सिध होई।।५३।।
धन धान्य सुवन सुख दायक।
देही सकल लक्ष्मी गणनायक।।५४।।
दीन दुखारी मैं तुम्हारे पांव पलोटत।
आठो सिध्दी ताके चरणौ में लोटत।।५५।।

होवे अरिष्ट दुख सारे हो महान।
देके सुकून सुखी करे जहान।।५६।।
पतित तारी हे जग पालक।
कल्याणी पापी कुल घातक।।५७।।
शेष सुरेश न पावत पारा।
गजलक्ष्मी रुप धर्यो इक बारा।।५८।।
तुम समान दाता नहिं दूजा।
विधिवत करें भक्तजन पूजा।।५९।।
रुप मनोहर जब तुम धारा।
दुष्टदलन कीन्हेहु संहारा।।६०।।
नाम अनेकन मात तुम्हारे।
भक्तजनों के संकट तारे।।६१।।
कली के कष्ट कलेशन हारी।
भव भय मोचन मंगल कारी।।६२।।
महिमा अगम वेद यश गावैं।
नारद शारद पार न पावैं।।६३।।
भू पर भार बढयौ जब भारी।
तब तब तुम प्रकट महतारी।।६४।।
आदि अनादि अभय वरदाता।
विश्वविदित भव संकट त्राता।।६५।।
कुसुमय नाम गजलक्ष्मी लीन्हा।
उसको सदा अभय वर दीन्हा।।६६।।
ध्यान धरें श्रुति शेष सुरेशा।
काला रुप लखि तुमरो भेषा।।६७।।
कलुआ भैंरों संग तुम्हारे।
अरि हित रुप भयानक धारे।।६८।।
आशीर्वाद तुम्हारा बहुत ही हितकारी।
चौंसठ जोगन रहे आज्ञाकारी।।६९।।

संकट में जो सुमिरन करहीं।
उनके कष्ट गजलक्ष्मी तुमही हारी।।७०।।
प्रेम सहित जो कीर्ति गावैं।
भव बन्धन सों मुक्ती पावैं।।७१।।
गजलक्ष्मी कवच जो पढहीं।
स्वर्गलोक बिनु बंधन चढहीं।।७२।।
दया दृष्टि हेरौ गणेश जगदम्बा।
केहि कारण गज मां कियौ विलम्बा।।७३।।
करहु गजलक्ष्मी तु रखवाली।
जयति जयति गज वीरा सब को पाली।।७४।।
सेवक दीन अनाथ अनारी।
भक्तिभाव युति शरण तुम्हारी।।७५।।
प्रेम सहित करे जो दिव्य कवच पाठ।
तिनकी पूरन कामना होय सकल जग ठाठ।।७६।।
स्वामीजी ने दिया गजलक्ष्मी का वर्दान।
दीन दुखारी भगत को करेंगे धनवान।।७७।।
जों होई पिडा जादू टोनादी जहाल।
नाश कर उसे गजलक्ष्मी, ऐसी करे धमाल।।७८।।
नमो गजलक्ष्मी, तुम्हारी कीर्ति हो महान।
कृपा दृष्टी से पूरण हो अटके सारे काम।।७९।।
स्वामी तुम गजलक्ष्मी के संग हमरे घर में विराजे।
इस भगत के संकट त्रिकाल बुझावे।।८०।।
ऐसी महिमा तेरी हो अगाद।
इस भगत को तुम सभी दो साथ।।८१।।
।।श्री गजलक्ष्म्याऽर्पणमस्तु।।